स्नातकोत्तर कला उपाधि (ज्योतिष)
(MAJY)

MJY-004 कुण्डली निर्माण

सत्रीय कार्य(Assignment)
(जुलाई 2024 तथा जनवरी, 2025 सत्रों के लिए)

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

एम.ए. ज्योतिष कार्यक्रम
सत्रीय कार्य 2024–25

पाठ्यक्रम कोड : MJY-004 /2024–25

छात्र/छात्राओ !

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जॉच सत्रीय कार्य है, इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्यः आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, इसी का मूल्यांकन करना इस सत्रीय कार्य का उद्देश्य है, यहाँ पाठय सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है।

निर्देशः– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िएः

1. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम पूरा पता और दिनांक लिखिए।
2. बाईं ओर पाठयक्रमय का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे प्रदर्शित हैः

अनुक्रमांकः...

नामः...

पताः...

पाठ्यक्रम का नाम/कोडः...

सत्रीय कार्य कोड..

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोडः.............................

दिनांकः...

3. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का प्रयोग करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
4. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
5. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अन्तिम तिथि :

जुलाई 2024 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2025
जनवरी 2025 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2025

विशेष ध्यातव्य :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़े। पुनः इससे सम्बन्धित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अन्त में प्रत्येक प्रश्न के सम्बन्ध में सभी महत्वपूर्ण बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबन्धात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार लिखना चाहिए।

3. यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

   क) आपका उत्तर तार्किक एवं क्रमबद्ध हो।
   ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्टता हो।
   ग) दिया गया उत्तर आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
   घ) कोई भी उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक न हो।
   ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों।

4. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

5. **विशेष** : अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

नोटः विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

MJY-004 कुण्डली निर्माण

(सत्रीय कार्य)

पाठ्यक्रम कोड : **MJY-004**.
सत्रीय कार्य कोड : **MJY-004** /2024–25
कुल अंक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य 02 खण्डों में विभक्त है। सभी खण्ड अनिवार्य हैं। 15 अंक के प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दीजिए। 10 अंक के प्रश्नों का लगभग आठ सौ शब्दों मेंउत्तर देना है।

खण्ड–1

निर्देश– निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए : 15X4=60

1. कुण्डली निर्माण में चालन विधि व इष्टकाल का उल्लेख कीजिए।
2. बलाबल के निर्धारक अवयवों में राशि एवं ग्रह का स्वरूप निरूपित कीजिए।
3. लग्न साधन का किसी उदाहरण के द्वारा विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. अष्टक वर्ग किसे कहते हैं? इसके साघन की विधि का विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. दशा साधन के आलोक में विंशोत्तरी दशा का वर्णन कीजिए।
6. तात्कालिक ग्रह स्पष्ट में सूर्योदय तथा सूर्यास्त का क्या स्वरूप है? वर्णन कीजिए।
7. पञ्चांग द्वारा ग्रहों का तात्कालिक स्पष्टीकरण किस प्रकार होता है? उल्लेख कीजिए।

खण्ड–2

4X10=40

निर्देशः अधोलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. दशमलग्न साधन की विधि का वर्णन कीजिए।
2. भाव साधन में चलित भाव चक्र का निर्माण कैसे होता है? उल्लेख कीजिए।
3. दृष्टि विचार की अवधारणा का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।
4. षड्वर्ग से क्या समझते हैं? वर्णन कीजिए।
5. भारतीय ज्योतिष शास्त्र में ग्रहमैत्री की क्या उपयोगिता है? सिद्ध कीजिए।
6. भयात और भभोग को उदाहरण से परिभाषित कीजिए।
7. सूक्ष्म दशा और प्राण दशा की संकल्पना का वर्णन दीजिए।
8. नक्षत्र राशि एवं ग्रहों का सम्बन्ध क्या है? उल्लेख कीजिए।